जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – अक्टूबर 2022 ।। अंक – 27 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

पंचगव्य से निर्मित रंगबिरंगे दीये से आई समृद्धि (पृष्ठ – 02)

लहठी उत्पादन से बदली कांति की किस्मत (पृष्ठ – 03)

त्योहारों में जरूरी है साफ–सफाई (पृष्ठ – 04)

त्योहारी मौसम में खुला आर्थिक समृद्धि का द्वार

बिहार की विविधिता इसे अनेकता में एकता एवं परिपूर्णता प्रदान करते हैं। यहां के पर्व–त्योहार ने इसे ऐतिहासिक पहचान दी है। पर्व–त्योहार बिहार की भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विविधिता को प्रतिबिम्बित करते हैं। बिहार हमेशा से अपनी लोककलाओं, हस्तकलाओं और शिल्पकलाओं के लिए प्रसिद्व रहा है। पर्व–त्योहार के मौसम में इसका स्वरूप और भी ज्यादा निखर कर आता है। इन्हीं पर्व त्योहारों के द्वारा बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास का नया रास्ता खुलता है। राज्य के गांवों के खेतों, पगडंडियों, ग्रामीण बाजारों से होकर समृद्धि गुजरती है और यह अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करती है। इन्हीं कारणों से जीविका का पूरा ध्यान ग्रामीण क्षेत्रों के गरीबों, सामाजिक तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के उत्थान पर है। जीविका के प्रयासों के कारण आज राज्य की एक बड़ी आबादी गरीबी से बाहर निकलकर एक बेहतर जीवन जी रही है। जीविका के दूरगामी सोच का सकारात्मक परिणाम आज हमारे सामने है।

जीविका की कोशिशों का नतीजा है कि राज्य के हजारों परिवार जीविका की मदद से विभिन्न प्रकार के रोजगार एवं स्वरोजगार से जुड़कर अपनी आर्थिक स्थिति में बदलाव तो ला ही रहे हैं, वहीं समाज के आर्थिक विकास में अपना अहम योगदान भी दे रहे हैं। जीविका से जुड़े परिवारों को वित्तीय समावेशन की प्रकिया से जोड़कर उन्हें रोजगार के लिए प्रशिक्षित कर आत्मविश्वासी बनाया गया है। आज इन परिवारों द्वारा अलग–अलग प्रकार के कई रोजगार एवं स्वरोजगार की गतिविधियां सफलता पूर्वक संचालित की जा रही हैं। इन परिवारों के लिए पर्व–त्योहार का समय अपने रोजगार को फैलाने एवं स्थापित करने का एक सुंदर मौका होता है। पर्व त्योहार के इस मौसम में दीदियों के पास काम की अधिकता तो होती ही है वहीं, आर्थिक सशक्तीकरण का नया मार्ग भी खुलता है। त्योहार के इस मौसम में कई दीदियों द्वारा पूजा–पाठ से संबंधित सामग्रियों का उत्पादन एवं बिक्री की जाती है तो कई दीदियां कला–शिल्प से जुड़ी वस्तुओं का निर्माण एवं विपणन करती हैं। मिथिला पेंटिंग, सिक्की–सुजनी, रेडीमेड वस्त्रों का उत्पादन एवं विपणन भी दीदियों के मुख्य कार्यों में से एक है। कई दीदियों द्वारा मिठाई, रंग–बिरंगे दीप, अगरबत्ती, सुप, दउड़ी, डलिया, लहठी, झाड़ू आदि का उत्पादन कर उसे बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कई दीदियों द्वारा खिलौनों एवं बांस से निर्मित वस्तुओं का भी उत्पादन कर उसे बेचा जाता है। दीदियों द्वारा पापड़, तिलौड़ी, अदौड़ी, अचार आदि का उत्पादन कर उसे बेचा जाता है।

त्योहार के इस मौसम में जीविका दीदियां काफी व्यस्त हैं और मांग के अनुरूप आपूर्ति के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। दीदियों के प्रयासों के कारण आज छोटे–छोटे व्यवसायों ने भी अपनी गति को पकड़ लिया है। त्योहारी मौसम के कारण बढ़ते व्यवसाय ने दीदियों के आर्थिक समृद्वि के रास्ते को सुगम बनाया है, वहीं ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति देने का भी काम किया है। आज दीदियों के प्रयासों का नतीजा है कि गांवों को आर्थिक रूप से स्वतंत्र और स्वावलंबी बनाए जाने में सफलता हासिल की जा सकी है। आज जीविका के प्रयासों का फल है कि गांवों में बदलाव एवं खुशहाली की बयार बह रही है। आज हमारी दीदियों की आय कई गुणा बढ़ गयी है।

पंचगव्य से निर्मित रंगबिरंगे दीये से आई समृद्धि

नालंदा जिले के दक्षिणी छोर पर स्थित गिरियक प्रखंड में अवस्थित भगवान महावीर के मोक्ष की धरती एवं जैन धर्म के मतावलंबियों के पवित्र स्थली पावापुरी के समीप पोखारपुर पंचायत के पावा गांव की सुषमा प्रेरणा जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हैं। कोविड–19 महामारी के दौरान रोजगार के साधन के अभाव में सुषमा को यूट्यूब के माध्यम से पंचगव्य (गाय का गोबर, दही, दूध, घी एवं मुल्तानी मिट्टी) से निर्मित एवं पर्यावरण के लिहाज से सुरक्षित रंगबिरंगे दीप बनाने की प्रेरणा मिली।

सुषमा के पति श्रीकांत शर्मा किसान हैं। इनको 2 पुत्र हैं। अगस्त 2021 में कोविड–19 महामारी के दौरान सुषमा एवं उनके पुत्रों के द्वारा यूट्यूब देखकर रंगबिरंगे दीया बनाने का विचार आया। इसके बाद उनके द्वारा इसपर काफी जानकारी इकट्ठा की गई। जिसके बाद पंचगव्य जिसमें गाय का गोबर, दही, दूध, घी एवं मुल्तानी मिट्टी से पर्यावरण के अनुकूल दीया बनाया जाने लगा। इस कार्य के बाद सुषमा द्वारा समूह से ऋण लेकर नागपुर महाराष्ट्र से दीप बनाने का मशीन खरीदकर मंगवाया गया। प्रारंभ में सिर्फ दीदी एवं उनके परिजनों द्वारा ही दीप निर्माण का कार्य किया जा रहा था। बाद में सुषमा के द्वारा समूह की अन्य दीदियों को भी इस कार्य से जोड़ा गया। दीदियों द्वारा 22 हजार से ज्यादा रंगबिरंगे एवं लुभावना दीया बनाया गया है, जो एक कृतिमान है। इस कार्य ने जिले भर में पावा गांव का नाम रौशन कर दिया।

पंचगव्य दीप निर्माण की प्रक्रिया में उपयोग होने वाले पदार्थों एवं निर्माण में आए अन्य खर्चों को मिलाकर कुल लागत 4 से 5 रूपया आया, वहीं बाजार में यह दीया 8 से 10 रूपया की दर से बिकी की जा रही है। जीविका दीदियों के द्वारा निर्मित दीयों में से अधिकांश की बिक्री विभिन्न माध्यमो से की जा चुकी है। इन दीयों की रौशनी ने दीदियों के आर्थिक अंधेरे को दूर कर दिया।

ग्रामीण हुनर को मिला बाज़ार, रेडीमेड कपड़ों की बढ़ी मांग

जीविका द्वारा संपोषित एवं जीविका दीदियों द्वारा संचालित उत्सव महिला सिलाई प्रशिक्षण सह उत्पादक समूह द्वारा रेडीमेड कपड़ा निर्माण एवं बिक्री ने जीविका दीदियों के आर्थिक उन्नति एवं हुनर का मार्ग प्रशस्त किया है। आज दीदियां इसकी मदद से स्वावलंबी बन चुकी हैं। नारी सशक्तीकरण एवं गरीबी उन्मूलन की दिशा में कार्य कर रही बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, जीविका ने राज्य के प्रत्येक ज़िले में अत्याधुनिक सिलाई केंद्र खोलने का निर्णय लिया है।

इसी कड़ी में बक्सर जिला अंतर्गत ब्रहमपुर प्रखंड परिसर में उत्सव जीविका महिला सिलाई प्रशिक्षण सह उत्पादक केंद्र की स्थापना 18 मई 2022 को की गयी। सिलाई प्रशिक्षण सह उत्पादन केंद्र ने एक समय में बाज़ार में मास्क की कमी को पूरा किया। इन सिलाई केन्द्रों ने कोरोना काल में मांग के अनुरूप मास्क का उत्पादन एवं आपूर्ति कर लाखों रुपये का शुद्ध मुनाफा कमाया है। उत्पादक समूह की अध्यक्ष श्रीमती मंजू देवी बताती हैं कि–'मांग के अनुरूप केंद्र द्वारा मास्क, पेटीकोट, ब्लाउज, पर्दा, पंजाबी शर्ट, स्कूल ड्रेस, बेडशीट, लहंगा, कुर्सी कवर और तिरंगा झंडा का उत्पादन कर उसकी आपूर्ति भी की जा रही है। रेडीमेड कपड़ा की खरीदारी परिधान विक्रेता, मॉल, स्थानीय ग्रामीण और जीविका दीदियों द्वारा की जाती है। उत्सव जीविका महिला सिलाई प्रशिक्षण सह उत्पादक केंद्र से रेडीमेड कपड़ों की लगभग 19 लाख 88 हजार 330 रुपये की खरीद–बिक्री पिछले दो सालों में हुई है। अभी लगभग 70 हजार रुपये के ब्लाउज, पेटीकोट, बेडशीट, पर्दा शर्ट और नाईट शूट का आर्डर केन्द्र को प्राप्त है। अत्याधुनिक सिलाई केंद्र का परिणाम भी अपेक्षा के अनुरूप है। आधुनिकता के दौर में ग्रामीण हुनर को केन्द्र द्वारा पहचान दी ही जा रही है, वहीं उत्पादक को बड़ा बाज़ार और प्रशंसक भी मिल रहे हैं। इन सिलाई केन्द्रों से जुड़ी जीविका दीदियां आत्मनिर्भरता की ओर सतत् अग्रसर हैं।

अगरबत्ती उत्पादन से आई खुशहाली

जीविका के 13 स्वयं सहायता समूहों से जुडी कुल 50 दीदियों को जोड़कर चतुर्भुज जीविका अगरबत्ती उत्पादक समूह का गठन 19 फरवरी 2016 को किया गया। समूह का मुख्य उद्देश्य अगरबत्ती निर्माण कर स्थानीय बाजार में बेचना एवं उसका उपयोग करना है।

ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से उत्पादक समूह से जुड़ी दीदियों को नि:शुल्क प्रशिक्षण दिलवाया गया। प्रधानमंत्री खनिज क्षेत्र कल्याण योजना के अंतर्गत जिला पदाधिकारी के निर्देश पर खनन विभाग से कुल 3 लाख 43 हजार रुद्ध की राशि 24 दिसम्बर 2018 को चतुर्भुज अगरबत्ती उत्पादक समूह को हस्तगत करायी गई। दूसरी तरफ इस समूह के सभी सदस्यों के साथ समय–समय पर बैठक की गई। निर्माण कार्य एवं अन्य कार्यों को संपादित करने हेतु गांव में ही एक कार्यालय एवं निर्माण यूनिट के लिए मकान भाड़े पर लिया गया। अगरबत्ती उत्पादन में उपयोग होने वाले कच्चे मालों की खरीदारी की गयी। वर्तमान समय में पटना सँ सस्ता एवं गुणवत्ता युक्त सामानों की खरीदारी की जा रही है। उत्पादक समूह की खरीदारी समिति मार्केट सर्वे कर नए जगहों और दुकानों को तलाश करती रहती हैं जहां और भी गुणवत्ता की सामग्री मिल सके और समूह को लाभ मिल सके।

शेखपुरा जिले के चेवाड़ा प्रखण्ड के बाजारों के अलावा शहर के आस–पास के प्रसिद्ध पूजा स्थलों पर अगरबत्ती की बिक्री की जाती है। नवरात्र पूजा, दीपावली, छठ पूजा जैसे पर्व त्योहारों के अवसर पर भी अगरबत्ती की खूब बिक्री होती है। जहां गांव में ग्रामीणों के द्वारा इसका उपयोग किया जा रहा है, वहीं शहर के मेला–महोत्सवों में लगे स्टॉलों के माध्यम से इसकी बिक्री की जा रही है। पटना में लगने वाले सरस मेला में भी इन दीदियों के द्वारा लाइव अगरबत्ती निर्माण किया गया। यहां भी दीदियों के अगरबत्ती की काफी मांग देखी गयी। इस रोजगार से अब स्थानीय जीविका दीदियों को महिला उद्यमी के रूप में पहचान मिल रही है।

लहठी उत्पादन से बदली कांति की किस्मत

सफलता की सबसे खास बात यह होती है कि वह मेहनत करने वालों पर मेहरबान हो जाती है। कुछ ऐसा ही हुआ मुजफ्फरपुर के बोचहां प्रखंड के झंपहां की रहने वाली कांति देवी के साथ। कांति देवी अपने पूरे परिवार के साथ हरियाणा के रोहतक में रहकर एक अण्डा फैक्ट्री में दिहारी मजदूरी करती थी। इस अण्डा फैक्ट्री में काम करके कांति देवी और उनके पति को 7 से 8 हजार की आमदनी हो रही थी जिससे उनके परिवार का भरण–पोषण किसी प्रकार हो रहा था। इसी बीच जब पूरा विश्व कोरोना जैसी महामारी के चपेट में आ गया और पूरे देश में लॉकडाउन लगा दिया गया तो फैक्ट्री के मालिक ने कांति को भी काम नहीं आने का निर्देश दे दिया। उस विकट परिस्थिति में अपने 4 बच्चों के साथ कांति किसी तरह घर वापस आ गयीं।

घर वापस आने के बाद उनके पास सबसे बड़ी समस्या रोजगार की थी। कोविड के समय में काम भी बहुत कम मिल रहा था। ऐसे में कांति देवी के पति राजमिस्त्री के साथ दिहाडी मजदूरी करके अपने परिवार का पालन–पोषण करने लगीं। लॉकडाउन में जब बड़ी संख्या में प्रवासी मजदूर घर लौट रहे थे तब जिला प्रशासन मुजफ्फरपुर एवं जीविका ने तिरहुत लहठी उत्पादन केन्द्र की स्थापना कर उनमें दूसरे राज्यों से लौटे प्रवासी महिला मजदूरों को जोड़कर उनको रोजगार उपलब्ध कराया।

इन्हीं में से एक कांति देवी को उत्पादन केन्द्र की ओर से एक भट्ठी दी गयी। जिससे उन्होंने अपना लहठी उत्पादन का कार्य शुरु किया। आज उसी भट्ठी से कमाई कर उसने दो भट्ठी कर ली है। यही नहीं उन्होंने एक कामगार को महीने पर रख भी लिया है। कांति देवी बताती हैं कि वह प्रतिदिन 30 सेट लहठी का उत्पादन करती हैं, जिसको बाजार में 1 से 2 हजार में बेचती हैं। कांति बताती हैं कि–'कच्चा माल और मेहनताना काटकर प्रतिदिन औसतन 1 हजार की कमायी हो जाती है।' इसी कमाई से आज वह अपने बच्चों को पढ़ा रही है। बेटा इंटरमीडिएट में जिले भर में अव्वल आया था। अब कांति का परिवार खुशहाल है।

त्योहारों में जरूरी है साफ–सफाई

हमारे समाज में त्योहारों का विशेष महत्व है। इसका संबंध धर्म एवं संस्कृति से होने के साथ–साथ इसमें स्वच्छता, पवित्रता और सात्विकता को खास महत्व दिया गया है। समाज में ऐसी धारणा है कि साफ– सुथरे स्थानों पर ही देवताओं का वास होता है। यही कारण है कि सभी त्योहारों के अवसरों पर घरों की साफ–सफाई से लेकर अपने तन–मन को स्वच्छ करने के अलावा साफ और नए कपड़े पहनने की परंपरा रही है। साफ–साफाई के अलावा रंगोली, रौशनी या फूलों का उपयोग कर घरों को आकर्षक बनाया जाता है। ऐसे मौकों पर बच्चों में खास उत्साह देखा जाता है। त्योहार का महत्व स्वच्छता को लेकर भी है। दशहरा, दीपावली एवं छठ जैसे महत्वपूर्ण त्योहार बरसात के ठीक बाद वाले महीने में मनाए जाते हैं। चूंकि बारिश की वजह से गांव के गली–मोहल्ले या घरों के आस–पास पर्याप्त नमी या कचड़े की वजह से गंदगी पसरने एवं बीमारियां फैलने का खतरा रहता है। इसकी रोकथाम हेतु त्योहारों के पूर्व घरों की साफ–सफाई, धुलाई, रंगाई, पुताई आदि करवाये जाते हैं ताकि घरों के आस–पास गंदगी न फैले और बीमारियों से बचा जा सके।

स्वच्छता के महत्व को देखते हुए ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले परिवारों को साफ–सफाई के लिए निरंतर प्रेरित किया जाता रहा है। खासकर जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़े परिवारों को साफ–सफाई, स्वच्छता एवं स्वच्छ व्यवहार अपनाने हेतु निरंतर जागरूक किया जाता है। इसके लिए जीविका द्वारा स्वास्थ्य, पोषण एवं स्वच्छता विषय से संबंधित मॉड्यूल 4 के अन्तर्गत स्वच्छता के महत्व एवं इसके सही तौर–तरीके के बारे में समूह की दीदियों को प्रशिक्षित किया जाता है। स्वयं सहायता समूहों एवं ग्राम संगठनों की बैठक में स्वच्छता पर नियमित चर्चा की जाती है। साथ ही रंगोली एवं खेल प्रतियोगिता के माध्यम से जीविका समूह की दीदियों को साफ–सफाई एवं स्वच्छता को अपने व्यवहार में अपनाने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। ये जीविका दीदियां न केवल अपने–अपने घरों की साफ–सफाई करती हैं बल्कि वे गांव के अन्य लोगों को स्वच्छता अपनाने हेतु जागरूक भी करती हैं। इसके लिए जीविका दीदियां ग्राम संगठन के नेतृत्व में प्रभात फेरी या रैली निकालकर जागरूकता फैलाती हैं। खासकर त्योहार के पूर्व ग्राम संगठन के नेतृत्व में दीदियां सामूहिक साफ–सफाई अभियान चलाती हैं। इसमें सभी वर्गों, महिलाओं, पुरुषों और बच्चों की सहभागिता से गांव की सड़कों, गली–मोहल्लों की साफ–सफाई की जाती है। चूंकि त्योहार लोगों की आस्था से जुड़ा होता है, ऐसे में त्योहारों के माध्यम से उन्हें स्वच्छता के लिए प्रेरित करना अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी होता है।

लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान के तहत सभी ग्राम पंचायतों में 'हमारा स्वच्छ–सुंदर गांव' अभियान का संचालन 10 सितंबर से 31 अक्टूबर 2022 तक किया जा रहा है। इसके तहत ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन का क्रियान्वयन, सामुदायिक व्यवहार परिवर्तन तथा गांव को सुंदर और स्वच्छ बनाने के लिए जन–जागरूकता से संबंधित गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है। गांवों की साफ–सफाई और स्वच्छता हेतु जीविका दीदियां 10 सितंबर से 2 अक्टूबर तक 'स्वच्छता की सेवा' का अभियान का संचालन की हैं। त्योहार के पूर्व साफ–सफाई पर तो सभी महत्व देते हैं लेकिन त्योहार मनाए जाने के उपरांत भी साफ–सफाई पर पहल करने की आवश्यकता है। खासतौर पर दीपावली–छठ जैसे त्योहार मनाए जाने के बाद घर के आस–पास या नदी–तालाब के किनारे फैली गंदगी देखी जाती है। ऐसे में त्योहार के उपरांत भी साफ–साफाई को लेकर लोगों को प्रेरित किया जा रहा है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, समस्तीपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, पूर्णियाँ
- श्री बिप्लव सरकार – प्रबंधक संचार
- श्री विकास कुमार राव – प्रबंधक संचार, सुपौल
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, बक्सर